Navbharat Times

Published from : New Delhi

Day Tuesday Date February 23, 2010

इंडिया में बढ़ रहा है रिटायरमेंट होम का बाजार

ताकि मजे से चले लाइफ की सेकंड इनिंग

विशेष संवाददाता ॥ नई दिल्ली

व्यक्ति की जैसी-जैसी उम्र बढ़ती, वैसे-वैसे सोच भी बदलती है। प्राथमिकताएं और जरूरतें भी बदलती हैं। खासकर रिटायरमेंट के बाद व्यक्ति शांति प्रिय माहौल को पसंद करता है। वह तेज रफ्तार से भागती-दौड़ती जिंदगी से परहेज करता है। व्यक्ति के बदलती इस धारणा को पश्चिम देशों के बाजार ने पहले ही अपनाया लिया था, मगर अब भारत के बाजार ने भी इस पर काम शुरू कर दिया है। इसका नतीजा है कि भारत में बन रहे रिटायरमेंट होम।

रीयल एस्टेट की ग्लोबल कंसल्टेंट जोंस लैंग लॉसले मेघराज (जेएलएलएम) के अनुसार भारत में अब रिटायरमेंट होम का बाजार बढ़ रहा है। पुणे, कोच्चि, बैंगलुरु, चेन्नई, मुंबई, दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में रीयल एस्टेट की कंपनियों रिटायर हुए लोगों के लिए बनाए गए रिटायरमेंट होम प्रोजेक्ट यानी आशियाना काफी पापुलर हो रहे हैं। रिटायरमेंट होम की खासियत यह होती है कि इसमें सभी बुनियादी सुविधाओं के साथ बेहतर इन्फ्रास्ट्रक्चर भी होता है। इसके साथ एडवांस मेडिकल की सुविधाएं होती हैं ताकि कोई बीमार पड़ जाए तो उसका जल्द से उपचार हो सके। इसमें उच्च तकनीक से सुसज्जित सुरक्षा प्रणाली होती है ताकि रिटायर हुए लोग बिना किसी डर के घर में रहे सकें। साफ-सफाई और हरियाली का भी इस प्रोजेक्ट में खासा ख्याल रखा जाता है।

भारत में रिटायरमेंट लोगों के लिए होम प्रोजेक्ट बनाने वाले अपने ग्राहकों का आर्थिक और सामाजिक पजिशन देखते हुए इसे बना रहे हैं। उदाहरण के तौर पर आशियाना हाउसिंग, भिवाडी, जयपुर और पुणे में ऐसे होम प्रोजेक्ट बना रही है। जयपुर में जहां प्राइस रेंज 11.8 लाख रुपये से शुरू होती है, वहीं भिवाड़ी में प्राइस रेंज 17.4 लाख रुपये हैं।

आशियाना हाउसिंग की जीएम (मार्केटिंग) अनुपमा गुलाठी का कहना है कि रिटायरमेंट के बाद लोगों की मानसिकता बदल जाती है। उनको ऐसी जगह की चाहत होती है, जहां वे अपने समान विचारधारा लोगों के साथ मिल-जुलकर रह सकेंगे। इसके अलावा अपना समय किसी सकारात्मक काम में लगा सकें। इस बात को ध्यान में रखते हुए उनके लिए होम प्रोजेक्ट बनाए जा रहे हैं। इसमें उनको पर्याप्त स्पेस दिया जा रहा है। इन्फ्रास्ट्रक्चर को बेहतर किया जा रहा। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि रिटायर हुए लोग अच्छी क्वॉलिटी का जीवन जी सकें।

बांजार विशेषज्ञों का कहना है कि पिछले कुछ सालों में लोगों और बाजार की सोच में बदलाव आया है। एक दशक पहले रिटायरमेंट होने के बाद बुजुर्ग लोगों के पास दो ही विकल्प रहते थे। या तो वे रहने की जगह खुद चुन लें या फिर परिवार के सदस्यों द्वारा तय जगह पर जाकर रहें। होमबे रेसिडेंशियल-जेएलएलएम, के सीईओ रमिंदर ग्रोवर का कहना है कि अब रिटायरमेंट हुए लोगों की आर्थिक स्थिति में भी बदलाव आया है। कई लोगों के पास इतनी वित्तीय शक्ति होती है कि वे रिटायरमेंट के बाद अलग से और अपनी सुविधा के अनुसार रह सकें। यही कारण है कि रिटायरमेंट होम की डिमांड बढ़ रही है।